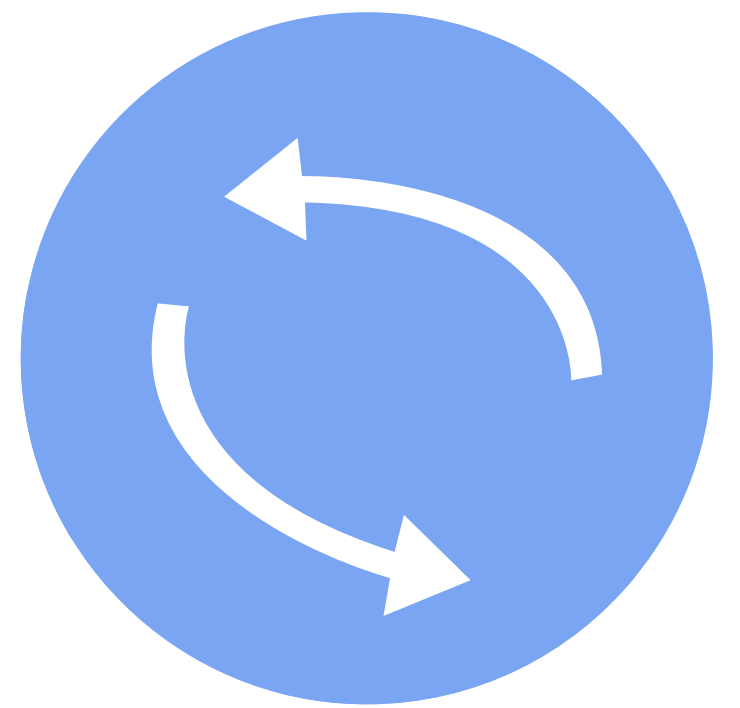


IGNOU

MHI-104

SOLVED MOST
REPEATED
QUESTIONS



Curated List of 30 Questions
that are seen to be repeated
frequently in the examinations.

By FarLearner.com

1. मौर्य राज्य की प्रकृति की चर्चा कीजिए।

Found in June 2020 (4) , Dec 2023 (1) , June 2022 (1)

FarLearner.com

मौर्य राज्य प्राचीन भारत का प्रथम व्यापक और सुदृढ़ साम्राज्य था, जिसकी स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की और जिसे सम्राट अशोक के शासनकाल में सर्वाधिक विस्तार और स्थायित्व प्राप्त हुआ। इसकी प्रकृति मूलतः केंद्रीकृत, निरंकुश तथा संगठित प्रशासनिक ढाँचे पर आधारित थी, जिसने भारतीय राज्य-व्यवस्था को एक नई दिशा प्रदान की।

मौर्य राज्य की सबसे प्रमुख विशेषता उसका अत्यधिक केंद्रीकरण था। शासन की समस्त शक्तियाँ राजा के हाथों में निहित थीं, और वही नीति-निर्धारण, न्याय और प्रशासन का सर्वोच्च केंद्र था। अर्थशास्त्र के अनुसार राजा को 'स्वामी' कहा गया है, जो राज्य के सभी अंगों का नियंत्रक होता है। विशाल साम्राज्य को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु इसे प्रांतों, जनपदों और ग्रामों में विभाजित किया गया, जहाँ नियुक्त अधिकारी राजा के प्रति पूर्णतः उत्तरदायी थे।

प्रशासनिक दृष्टि से मौर्य राज्य अत्यंत विकसित और संगठित था। विभिन्न विभागों जैसे राजस्व, वाणिज्य, खनन, वन, सिंचाई आदि के लिए विशिष्ट अधिकारियों की नियुक्ति की गई थी। एक सुदृढ़ गुप्तचर व्यवस्था भी थी, जो शासन की स्थिरता बनाए रखने में सहायक थी। कर व्यवस्था सुव्यवस्थित थी, जिसमें भूमि कर प्रमुख स्रोत था, साथ ही व्यापारिक कर भी वसूले जाते थे।

FarLearner.com

MHI-104 Most Repeated Questions

सैन्य दृष्टि से मौर्य राज्य अत्यंत शक्तिशाली था। एक विशाल स्थायी सेना का गठन किया गया था, जिसमें पैदल, घुड़सवार, रथ और हाथी शामिल थे। यह सेना साम्राज्य के विस्तार और उसकी सीमाओं की रक्षा के लिए आवश्यक थी। इसके अतिरिक्त, सीमाओं पर किलों और चौकियों की व्यवस्था भी की गई थी।

FarLearner.com

सम्राट अशोक के समय मौर्य राज्य की प्रकृति में एक महत्वपूर्ण नैतिक परिवर्तन देखा जाता है। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने 'धम्म' की नीति अपनाई, जिसमें अहिंसा, सहिष्णुता और प्रजा के कल्याण पर बल दिया गया। इस प्रकार राज्य केवल शक्ति और नियंत्रण का साधन नहीं रहा, बल्कि एक लोककल्याणकारी संस्था के रूप में भी विकसित हुआ।

आर्थिक दृष्टि से मौर्य राज्य आत्मनिर्भर और समृद्ध था। कृषि को विशेष महत्व दिया गया, साथ ही व्यापार और शिल्प उद्योग को भी प्रोत्साहन मिला। सड़कों और संचार व्यवस्था के विकास से आंतरिक और बाहरी व्यापार में वृद्धि हुई।

न्याय व्यवस्था भी कठोर और प्रभावी थी, जहाँ राजा अंतिम न्यायाधीश था। दंड नीति कड़ी थी, जिससे सामाजिक अनुशासन और कानून व्यवस्था बनाए रखने में सहायता मिली।

सारांशतः, मौर्य राज्य की प्रकृति एक शक्तिशाली केंद्रीकृत शासन, विकसित प्रशासनिक तंत्र, सुदृढ़ सैन्य शक्ति और लोककल्याणकारी दृष्टिकोण का समन्वित रूप थी, जिसने भारतीय राजनीतिक इतिहास में एक आदर्श साम्राज्य की स्थापना की।

FarLearner.com

2 . बुद्ध काल में क्षेत्रीय राज्यों के उदय की विवेचना कीजिए।

Found in June 2020 (1) , June 2024 (1) , June 2021 (1)

FarLearner.com

बुद्ध काल (छठी शताब्दी ईसा पूर्व) भारतीय इतिहास में गहन राजनीतिक परिवर्तन का युग था, जिसमें जनजातीय संगठन से विकसित होकर शक्तिशाली क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। इस काल में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है, जिनमें मगध, कोशल, अवन्ति और वज्जि प्रमुख थे। ये राज्य भारतीय राजनीतिक संरचना के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण का प्रतिनिधित्व करते हैं।

क्षेत्रीय राज्यों के उदय के पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारण आर्थिक परिवर्तन था। लोहे के औजारों के व्यापक उपयोग से कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। गंगा के उपजाऊ मैदानों में खेती का विस्तार हुआ, जिससे अधिशेष उत्पादन संभव हुआ। यह अधिशेष राज्य के पोषण, कर वसूली और प्रशासनिक ढाँचे के विकास का आधार बना।

दूसरा प्रमुख कारण व्यापार और नगरीकरण का विकास था। इस काल में व्यापारिक मार्गों का विस्तार हुआ तथा अनेक नगरों का उदय हुआ, जैसे राजगृह, वैशाली और श्रावस्ती। व्यापारिक गतिविधियों के बढ़ने से धन का संचय हुआ, जिससे राज्यों की आर्थिक शक्ति सुदृढ़ हुई और उनके विस्तार की संभावनाएँ बढ़ीं।

FarLearner.com

राजनीतिक दृष्टि से भी इस काल में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। पूर्व की जनजातीय व्यवस्था धीरे-धीरे समाप्त हो रही थी और उसकी जगह स्थायी राज्य व्यवस्था विकसित हो रही थी।

MHI-104 Most Repeated Questions

कुछ राज्यों में राजतंत्र स्थापित था, जबकि कुछ में गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली विकसित हुई, जैसे वज्जि संघ। इस प्रकार शासन के विविध रूप देखने को मिलते हैं।

FarLearner.com

मगध का उदय इस प्रक्रिया में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसकी सफलता के पीछे उसकी अनुकूल भौगोलिक स्थिति, लौह अयस्क की उपलब्धता, सुदृढ़ प्रशासन और सक्षम शासकों की भूमिका थी। गंगा नदी के तट पर स्थित होने के कारण यह क्षेत्र कृषि और व्यापार दोनों के लिए अत्यंत उपयुक्त था।

सैन्य संगठन और कर प्रणाली भी क्षेत्रीय राज्यों के उदय में सहायक रहे। स्थायी सेनाओं का गठन किया गया और नियमित कर वसूली की व्यवस्था स्थापित हुई, जिससे राज्य अधिक शक्तिशाली और संगठित बने।

धार्मिक और सामाजिक परिवर्तनों ने भी इस प्रक्रिया को प्रभावित किया। बौद्ध और जैन धर्म ने कर्म, नैतिकता और समानता पर बल दिया, जिससे समाज में नई चेतना का विकास हुआ और राजनीतिक संरचनाओं को वैचारिक आधार मिला।

इस प्रकार बुद्ध काल में क्षेत्रीय राज्यों का उदय आर्थिक समृद्धि, राजनीतिक परिवर्तन, सामाजिक जागरण और भौगोलिक अनुकूलताओं के संयुक्त प्रभाव का परिणाम था। समग्रतः, यह काल भारतीय इतिहास में राज्य निर्माण की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया को दर्शाता है, जिसने आगे चलकर साम्राज्यवादी व्यवस्थाओं की नींव रखी।

FarLearner.com

3 . मुगल राजत्व के सिद्धान्त की मुख्य विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

Found in June 2020 (3) , Dec 2023 (4) , Dec 2021 (3) , June 2024 (5 c)

FarLearner.com

मुगल काल में राजत्व का सिद्धान्त भारतीय मध्यकालीन राजनीतिक विचारधारा का एक परिपक्व और विशिष्ट रूप था, जिसमें फारसी, तुर्की तथा भारतीय परंपराओं का समन्वय दिखाई देता है। विशेषतः अकबर के शासनकाल में यह सिद्धान्त पूर्ण विकसित रूप में सामने आया।

मुगल राजत्व का प्रमुख आधार दैवी अधिकार (Divine Kingship) का सिद्धान्त था। सम्राट को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था, जिसे शासन करने का अधिकार दैवी कृपा से प्राप्त होता है। जहाँगीर ने स्वयं को 'न्याय का स्रोत' बताया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि राजा सर्वोच्च सत्ता का धारक था।

Get Solutions of All Repeated Questions

CLICK HERE

4 . प्रारंभिक मध्यकालीन राजव्यवस्था के अध्ययन संबंधी विभिन्न दृष्टिकोणों का वर्णन कीजिए।

Found in Dec 2023 (2) , Dec 2022 (2) , June 2024 (2) , June 2021 (2)

FarLearner.com

प्रारंभिक मध्यकालीन भारत (लगभग 600 से 1200 ई.) की राजव्यवस्था को समझने के लिए इतिहासकारों ने विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। यह काल राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन का युग था, इसलिए इसकी व्याख्या एकरूप नहीं बल्कि बहुआयामी रही है।

सबसे प्रमुख दृष्टिकोण 'भारतीय सामंतवाद' का है, जिसे आर. एस. शर्मा ने प्रतिपादित किया। उनके अनुसार इस काल में भूमि अनुदानों की वृद्धि के कारण सामंती संबंधों का विकास हुआ। राजा भूमि दान देकर सामंतों को अधिकार देता था, और बदले में वे सैन्य एवं प्रशासनिक सेवाएँ प्रदान करते थे। इससे एक विकेंद्रित राजनीतिक संरचना विकसित हुई, जिसमें स्थानीय शक्तियों का प्रभाव बढ़ गया।

Get Solutions of All Repeated Questions

दूसरा महत्वपूर्ण दृष्टिकोण 'खंडित राज्य' (Segmentary State) का है, जिसे ए. ए. शर्मा ने प्रस्तुत किया। इस दृष्टिकोण के अनुसार राजा की शक्ति केवल केंद्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में उसका प्रभाव अलग-अलग स्तरों पर था। स्थानीय इकाइयों को काफी स्वायत्तता प्राप्त थी। यह मॉडल विशेष रूप से उत्तर भारत में उपयोगी माना गया।

[CLICK HERE](http://FarLearner.com)

5 . विजयनगर शासकों के अधीन नायक प्रणाली की विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

Found in June 2020 (8) , Dec 2024 (10 c) , Dec 2020 (8) , Dec 2021 (8) , June 2023 (10 b) , June 2022 (7)

FarLearner.com

विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था में नायक प्रणाली एक महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। यह प्रणाली विशेष रूप से सैन्य और प्रांतीय प्रशासन के संगठन के लिए विकसित की गई थी। नायक वे सामंत या सैन्य अधिकारी थे, जिन्हें राज्य की ओर से भूमि (अमरम) प्रदान की जाती थी और बदले में वे सैन्य तथा प्रशासनिक सेवाएँ देते थे।

नायक प्रणाली की प्रमुख विशेषता यह थी कि नायकों को भूमि से प्राप्त आय का एक बड़ा भाग स्वयं रखने की अनुमति थी, जबकि शेष भाग राज्य को कर के रूप में देना होता था। इससे स्थानीय स्तर पर आर्थिक स्वायत्तता विकसित हुई।

Get Solutions of All Repeated Questions

इस प्रणाली का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष इसकी सैन्य प्रकृति थी। नायकों को सम्राट के लिए सैन्य प्रदान करने पर सम्राट को सैन्य सहायता प्रदान करना था। इस प्रकार यह व्यवस्था विजयनगर की सैन्य शक्ति को सद्दह बनाने में सहायक थी।

FarLearner.com
CLICK HERE

प्रशासनिक प्रणाली में नायक प्रणाली को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था और वे सम्राट के अधीन थे, फिर भी उन्हें काफी हद तक स्वतंत्रता प्राप्त थी।

नायक प्रणाली में वंशानुगत प्रवृत्ति भी देखी जाती है, जिससे समय के साथ नायकों की शक्ति बढ़ने लगी और वे कभी-कभी केंद्रीय सत्ता के लिए चुनौती भी बन गए।

FarLearner.com

इस प्रकार, नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य की सैन्य और प्रशासनिक मजबूती का आधार थी, किंतु इसकी विकेंद्रीकृत प्रकृति ने बाद में साम्राज्य की कमजोरी में भी योगदान दिया। समग्रतः, यह प्रणाली केंद्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता के संतुलन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है।

6 . संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: एजटेक सभ्यता

Found in Dec 2023 (5 iii) , Dec 2024 (4) , June 2021 (10 iv) , June 2022 (5 b)

एजटेक सभ्यता मध्य अमेरिका की एक अत्यंत विकसित और संगठित सभ्यता थी, जिसका उत्कर्ष 14वीं से 16वीं शताब्दी के बीच हुआ। इसका प्रमुख केंद्र टेनोच्टिट्लान था, जो झील के बीच निर्मित एक भव्य नगर था और आज के मैक्सिको सिटी के स्थान पर स्थित था। एजटेकों ने अल्प समय में एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की, जो अपनी प्रशासनिक दक्षता, सैन्य शक्ति और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए प्रसिद्ध था।

FarLearner.com

राजनीतिक दृष्टि से एजटेक साम्राज्य एक केंद्रीकृत राजतंत्र था, जहाँ सम्राट सर्वोच्च शासक होता था। वह न केवल राजनीतिक बल्कि धार्मिक नेतृत्व भी करता था। साम्राज्य विस्तारवादी था और विजित

क्षेत्रों से कर (tribute) वसूल किया जाता था, जिससे केंद्रीय सत्ता सुदृढ़ होती थी। विभिन्न क्षेत्रों के शासकों को अधीन रखकर उनसे नियमित कर लिया जाता था, जिससे एक मजबूत साम्राज्यवादी संरचना विकसित हुई।

FarLearner.com

आर्थिक व्यवस्था अत्यंत उन्नत थी। एजटेकों ने 'चिनाम्पा' प्रणाली विकसित की, जिसे तैरते खेत भी कहा जाता है। यह प्रणाली झीलों में कृत्रिम द्वीप बनाकर कृषि करने की तकनीक थी, जिससे अत्यधिक उत्पादन संभव हुआ। इसके अलावा व्यापार भी व्यापक स्तर पर होता था। बाजारों में वस्तु-विनिमय प्रणाली प्रचलित थी, और कोको के बीज को मुद्रा के रूप में भी प्रयोग किया जाता था।

सामाजिक संरचना स्पष्ट रूप से वर्ग-आधारित थी। इसमें कुलीन वर्ग (नवाब), पुरोहित, योद्धा और सामान्य किसान एवं कारीगर शामिल थे। शिक्षा का भी विशेष महत्व था, और विभिन्न वर्गों के लिए अलग-अलग शिक्षण संस्थान थे। कला, स्थापत्य और चित्रलिपि लेखन में एजटेकों ने उल्लेखनीय प्रगति की, जिसका प्रमाण उनके मंदिरों, मूर्तियों और कोडेक्स (पुस्तकों) में मिलता है।

Get Solutions of All Repeated Questions

धार्मिक जीवन में एजटेकों का विश्वास था कि सूर्य देवता और सूर्य देवता को विशेष महत्व देते थे। उनका विश्वास था कि देवताओं को प्रसन्न रखने के लिए मानव बलि आवश्यक है। इसलिए धार्मिक जीवन में बलि देना एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान था। एजटेकों की संस्कृति में बलि देना एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान था।

FarLearner.com

CLICK HERE

सैन्य दृष्टि से एजटेक अत्यंत शक्तिशाली थे।

FarLearner.com

7 . संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: खानाबदोश साम्राज्य

Found in Dec 2023 (5 iv) , June 2021 (5 iv) , Feb 2021 (10 c)

FarLearner.com

खानाबदोश साम्राज्य उन राजनीतिक व्यवस्थाओं को कहा जाता है, जिनकी स्थापना घुमंतू (nomadic) जनजातियों द्वारा की गई थी। ये जनजातियाँ स्थायी कृषि पर निर्भर नहीं थीं, बल्कि पशुपालन, चरागाहों की खोज और मौसमी प्रवास पर आधारित जीवन व्यतीत करती थीं। मध्य एशिया के विशाल घास के मैदान (स्टेपी क्षेत्र) ऐसे साम्राज्यों के उदय के लिए अत्यंत अनुकूल थे।

राजनीतिक दृष्टि से खानाबदोश साम्राज्य जनजातीय संगठन पर आधारित होते थे। इनमें नेतृत्व एक शक्तिशाली सरदार या 'खान' के हाथों में केंद्रित होता था, जिसकी सत्ता व्यक्तिगत योग्यता, सैन्य कौशल और करिश्माई नेतृत्व पर निर्भर करती थी। चंगेज़ खान द्वारा स्थापित मंगोल साम्राज्य इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है, जिसने एशिया और यूरोप के विशाल भूभाग पर अपना नियंत्रण स्थापित किया।

Get Solutions of All Repeated Questions

खानाबदोश साम्राज्यों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनकी अत्यधिक गतिशीलता थी। ये साम्राज्य अत्यंत निपुण होते थे। उनकी सेना तेज गति से लंबी दूरी तय कर सकती थी, जिससे वे अचानक आक्रमण करने में सक्षम होते थे। हल्के हथियारों के साथ, ये साम्राज्य कृषि समाजों

[CLICK HERE](http://FarLearner.com)

8 . यूरोप में सामंतवाद के पतन के विभिन्न सिद्धांतों की चर्चा कीजिए।

Found in Dec 2023 (6) , June 2022 (6)

FarLearner.com

यूरोप में सामंतवाद मध्यकालीन सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था का प्रमुख आधार था, जिसमें भूमि के बदले सैन्य और अन्य सेवाएँ प्रदान की जाती थीं। किंतु 14वीं से 16वीं शताब्दी के बीच इस व्यवस्था का पतन प्रारंभ हुआ। इतिहासकारों ने इसके पतन को समझाने के लिए विभिन्न सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं, जो इस जटिल प्रक्रिया के अलग-अलग पहलुओं को स्पष्ट करते हैं।

पहला प्रमुख सिद्धांत आर्थिक परिवर्तन पर आधारित है। इस दृष्टिकोण के अनुसार व्यापार और नगरीकरण के विकास ने सामंतवाद को कमजोर किया। नगरों के उदय से एक नए मध्यवर्ग (बुर्जुआ वर्ग) का विकास हुआ, जिसने धन और व्यापार के माध्यम से शक्ति प्राप्त की। इससे भूमि-आधारित सामंती व्यवस्था की महत्ता घटने लगी और मुद्रा-आधारित अर्थव्यवस्था विकसित हुई।

Get Solutions of All Repeated Questions

दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत जनसंख्या और श्रम संकट से संबंधित है। ब्लैक डेथ जैसी महामारियों ने जनसंख्या को घटा दिया, जिससे श्रमिकों की कमी उत्पन्न हुई, जिसके परिणामस्वरूप किसानों की स्थिति मजबूत हुई और वे बेहतर शर्तों की मांग करने लगे।

इससे सामंतवाद का पतन हुआ।

तीसरा सिद्धांत शक्तिशाली राष्ट्र-राज्यों के उदय सामंतवाद के पतन का कारण बना।

[CLICK HERE](http://FarLearner.com)

जिसने आधुनिक युग की नींव रखी और राष्ट्र-राज्य तथा पूंजीवादी व्यवस्था के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

9 . मध्ययुगीन काल में यूरोप में जनसांख्यिकी में परिवर्तन की व्याख्या कीजिए।

FarLearner.com

Found in Dec 2023 (7) , June 2021 (9)

मध्ययुगीन काल में यूरोप की जनसांख्यिकी (demography) में व्यापक और महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जिन्होंने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया। यह परिवर्तन मुख्यतः दो चरणों में देखा जा सकता है—प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में जनसंख्या वृद्धि और उत्तर मध्ययुगीन काल में तीव्र गिरावट।

प्रारंभिक मध्ययुगीन काल (लगभग 1000–1300 ई.) में यूरोप की जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसका प्रमुख कारण कृषि तकनीकों में सुधार था, जैसे भारी हल (heavy plough), तीन-फसली प्रणाली (three-field system) और बेहतर सिंचाई व्यवस्था। इन नवाचारों के कारण खाद्यान्न उत्पादन बढ़ा और जनसंख्या में वृद्धि संभव हुई। साथ ही, अपेक्षाकृत स्थिर राजनीतिक परिस्थितियों ने भी जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहित किया।

FarLearner.com

इस जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप नए गाँवों और नगरों का विकास हुआ। जंगलों की कटाई कर नई भूमि को कृषि योग्य बनाया गया, जिससे 'आग्रेरियन एक्सपेंशन' हुआ। नगरों के विकास से व्यापार

**10 . हिन्द महासागर में पुर्तगाली व्यापार का विश्लेषण कीजिए।
इसके पतन के क्या कारण थे?**

Found in Dec 2022 (7) , June 2021 (7)

FarLearner.com

हिन्द महासागर में पुर्तगालियों का व्यापार 15वीं-16वीं शताब्दी में अत्यंत प्रभावशाली था, जिसकी शुरुआत वास्को द गामा के भारत आगमन (1498) से हुई। उन्होंने समुद्री मार्गों पर नियंत्रण स्थापित कर मसालों के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करने का प्रयास किया। गोवा, मालक्का और होर्मुज जैसे प्रमुख केंद्रों पर कब्जा करके उन्होंने एक सुदृढ़ व्यापारिक नेटवर्क विकसित किया।

पुर्तगालियों ने 'कार्टाज प्रणाली' लागू की, जिसके अंतर्गत समुद्री व्यापार करने वाले जहाजों को उनकी अनुमति लेना आवश्यक था। इससे वे व्यापार पर नियंत्रण रख सके। उनकी नौसैनिक शक्ति और तोपखाने ने उन्हें प्रारंभिक सफलता दिलाई, जिससे वे हिन्द महासागर व्यापार में प्रमुख शक्ति बन गए।

**Get Solutions of All
Repeated Questions**

CLICK HERE

com

FarLearner.com